मार्च २०१४

कींमत ₹ १२/-

युवा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

प्रेम स्वरूप

प्रेम स्वरूप

संपादकीय

बालमित्रों,

प्रेम ऐसी चीज़ है कि जिससे पत्थर भी पिघल जाता है, फिर हम तो इंसान है, तो क्या हम पर इसका असर नहीं होगा, लेकिन वह प्रेम कैसा होना चाहिए?

प्रेम परिभाषा सहित होना चाहिए। किसी भी चीज़ को हम प्रेम कहें वह नहीं चलेगा। यह मालूम न होने के कारण ही हम अपने मित्र और भाई-बहन को भरपूर प्रेम करने के बावजूद भी उनके साथ झगड़ा हो जाता है। और एक दूसरे से नाराज़ हो जाते हैं। क्या हमने कभी सोचा भी है कि ऐसा क्यों होता होगा?

सच्चा प्रेम किसे कहते हैं उसकी सुंदर परिभाषा परम पूज्य दादाश्री ने दी है। साथ ही साथ प्रेमस्वरूप कैसे बन सकते हैं, उसकी भी सुंदर समझ इस अंक में दी है।

तो आओ, हम भी प्रेमस्वरूप बनें और सबके साथ प्रेम से रहें।

- डिम्पल महेता

अक्रम एक्सप्रेस

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं... ३
यह तो नई ही बात! ४
प्रेम से पत्थर भी पिघले ६
जहाँ प्रेम वहाँ भेद नहीं १०
मीठी यादें १४
ऐतिहासिक गौरवगाथा १६
अपने आपको परखकर देखो! १८
समर कैम्प के बारे में जानकारी १९
GNC Day की झलक २०

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : १२
अखंड क्रमांक : १२
मार्च २०१४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता (हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

प्रेम स्वरूप मतलब क्या? कि सबकुछ अभेदभाव से देखना, अभेदभाव से व्यवहार करना। अभेदभाव मतलब क्या? "यह मेरा और यह तुम्हारा, यह अलग है।" ऐसी वैसी मान्यताओं को निकाल देना उसी का नाम प्रेमस्वरूप। एक ही परिवार हो ऐसा लगे। प्रेम मूर्ति बन जाना। सब एक जैसे ही लगें, जुदाई ही न लगें। यह तो जब तक कोई अपना काम कर देता है तब तक हमें उस पर प्रेम रहता है और काम ना करे तो प्रेम टूट जाता है, उसे प्रेम ही कैसे कह सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : शुद्ध प्रेमस्वरूप मतलब कैसे रहना?

दादाश्री : कोई अगर अभी आपको गाली देकर जाए और फिर से आपके पास आए फिर भी आपका प्रेम कम न हो उसका नाम शुद्ध प्रेम है। जगत् के साथ कब प्रेम स्वरूप होंगे? जब जगत् निर्दोष दिखेगा तब प्रेम उत्पन्न होगा। मेरा-तेरा कब तक लगता है? जब तक दूसरे को अलग समझते हैं, तब तक। परायों के साथ भेद है, तब तक अपने "मेरे" लगते हैं। जो अटेचमेन्टवालों को मेरा मानते हैं और जो डिटेचमेन्टवाले हैं, उन्हें पराया मानते हैं, वह किसी के साथ प्रेमस्वरूप नहीं होंगे।

प्रश्नकर्ता : तो प्रेम कब उत्पन्न होगा?

दादाश्री : आज तक जो भूलें हुई हों उनकी माफी माँग लो, तब प्रेम उत्पन्न होगा। उनका एक भी दोष नहीं हुआ पर मुझे दिखाई दिया, वह मेरा दोष है। जिसे प्रेमस्वरूप होना हो, उसे इस तरह करना चाहिए। तब तुम प्रेम स्वरूप बन सकोगे।

हमारी रीति है यह सब। हम जिस रीति से पार उतरे हैं, उसी रीति से पार उतारते हैं सभी को। प्रेम स्वरूप बनें तब सामनेवाले को अभेदता लगती है। इस तरह से सभी हमारे साथ अभेद हुए हैं। इस जगत् को सुधारने का रास्ता ही प्रेम है।

इन सभी को जो मैं सुधारता हूँ न, वह प्रेम से सुधारता हूँ। यह हम प्रेम से ही कह रहे हैं न। ये पचास हजार लोग हैं, लेकिन कोई भी ज़रा सा भी प्रेम रहित नहीं हुआ होगा। इस प्रेम से ही जी रहे हैं सभी।

"जब जगत् निर्दोष दिखेगा तब प्रेम उत्पन्न होगा।"

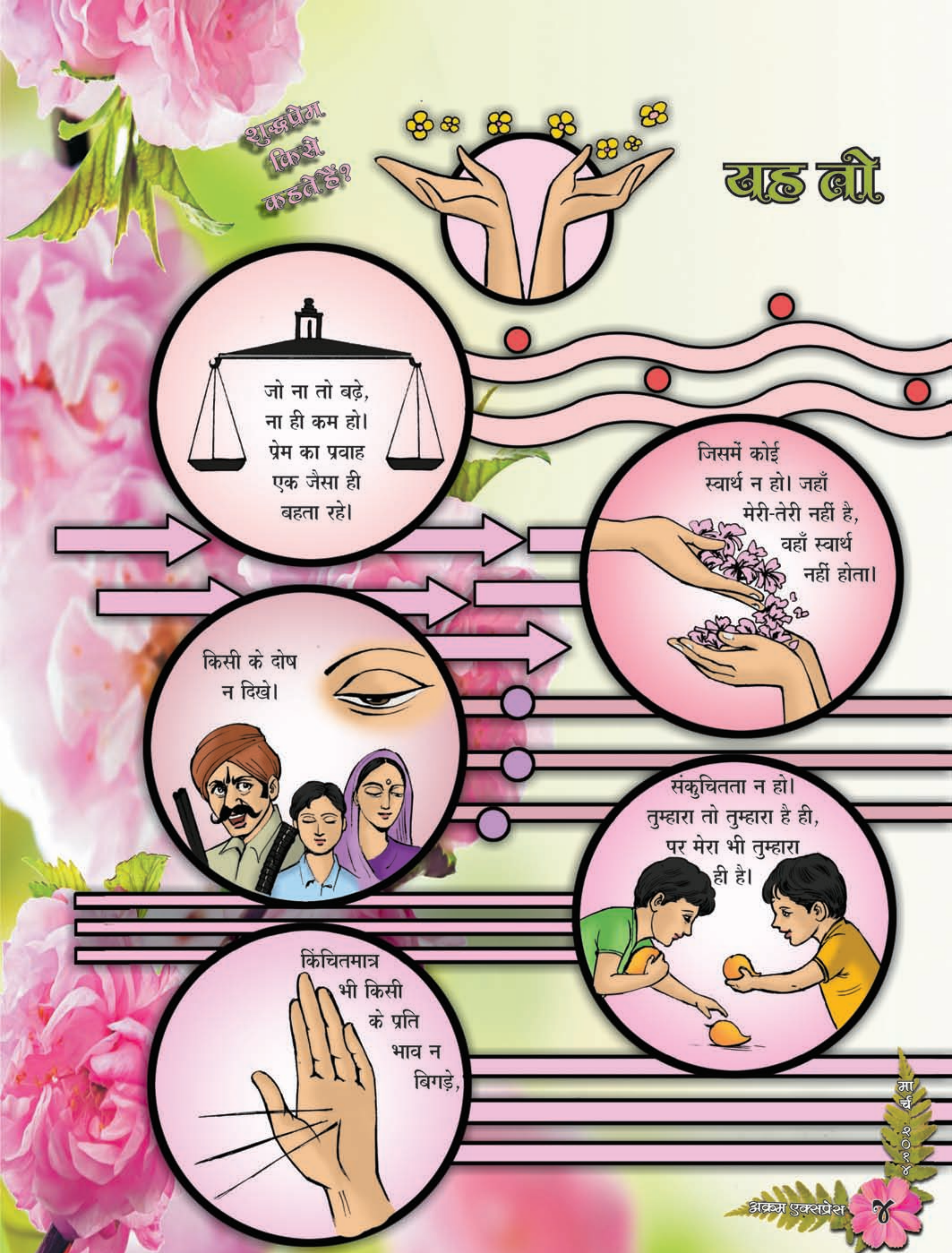
शुद्धप्रेम किसे कहते हैं?
यह तो
जो ना तो बढ़े, ना ही कम हो। प्रेम का प्रवाह एक जैसा ही बहता रहे।
जिसमें कोई स्वार्थ न हो। जहाँ मेरी-तेरी नहीं है, वहाँ स्वार्थ नहीं होता।
किसी के दोष न दिखे।
संकुचितता न हो। तुम्हारा तो तुम्हारा है ही, पर मेरा भी तुम्हारा ही है।
किंचितमात्र भी किसी के प्रति भाव न बिगड़े,

नई ही बात!

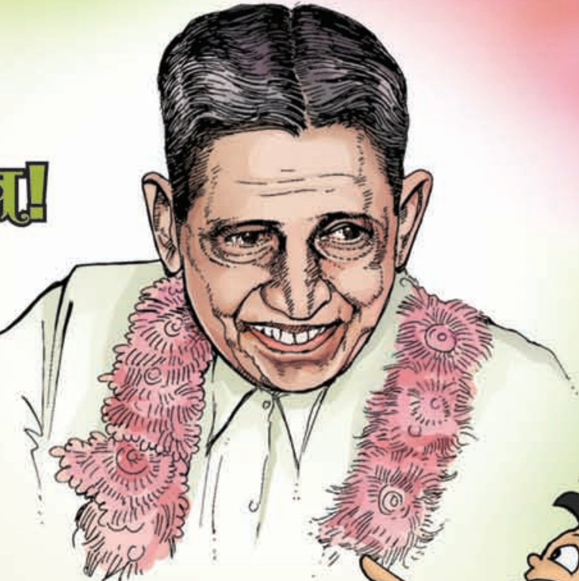

ज्ञानी का प्रेम, वह ही शुद्ध प्रेम है।
अगर कोई बालक बिना अक्कल की बात करे कि "दादाजी, आपको तो मैं खाने पर भी नहीं बुलाऊँगा, पानी भी नहीं दूँगा, फिर भी उस पर दादाजी का प्रेम कम नहीं होता और कोई अच्छा-अच्छा खाना खिलाए फिर भी बढ़ता नहीं, उसे प्रेम कहते हैं। अतः भोजन करवाओ तो भी प्रेम, न करवाओ तो भी प्रेम, गाली दे तो भी प्रेम और गाली न दे तब भी प्रेम, सभी जगहों पर प्रेम दिखता है।"

प्रेम से पत्थर भी पिघले

"ईशान आओ बेटा। तुम यहाँ क्यों आए हो, क्या तुम्हें पता है?" भाईसाहब ने प्रेम से ईशान से पूछा।

"हाँ, मुझे सब पता है। मेरे मम्मी-पापा मुझे मार-मारकर थक गए, इसलिए अब आप के पास मार खाने के लिए भेज दिया है। लेकिन मैं डरनेवाला नहीं हूँ। जो मैं घर पर करता था, वही मैं यहाँ भी करूँगा, करूँगा और करूँगा ही।" जमीन पर ज़ोर से पैर पटकते हुए ईशान ने नई दृष्टि संस्था के संस्थापक भाईसाहब को बेहिचक कह दिया। ईशान की बोल में रौब, उसका जोश और उसके दिल की सच्चाई भाईसाहब को स्पर्श कर गई।

उन्होंने बहुत प्यार से ईशान से कहा, "आओ मेरे बेटे, आओ। मैं तुम्हारे जैसे रौबवाले और पराक्रमी लड़के की तलाश में ही था।"

यह सुनकर ईशान को बहुत आश्चर्य हुआ। डैडी या मम्मी के सामने ऐसी असभ्यता से बोला होता, तो दो चार वाक्य बोलते ही एकाद थप्पड़ पड़ गया होता। उसने तो मन ही मन में लकड़ी की मार सहन करने की तैयारी भी कर ली थी। उसके बजाय भाईसाहब के फूल जैसे शब्द उसे सुनने मिले तब उसके छोटे से हृदय में हलचल मच गई।

ईशान का गुस्सा थोड़ा ठंडा हुआ, फिर भाईसाहब ने उससे कहा, "चलो ईशान, हम खाना खा लेते हैं। आज तो तुम्हारे डैडी ने सभी बच्चों के लिए श्रीखंड-पूड़ी की दावत दी है। तुम्हें श्रीखंड बहुत अच्छा लगता है न?"

"नहीं, मैं श्रीखंड नहीं खाऊँगा।" ईशान ने फिर वैसे ही कठोर शब्दों में कहा।

"अरे, मेरे बहादुर बेटे, पहली पहली बार घर आए हो और अगर तुम नहीं खाओगे तो मैं भी नहीं खाऊँगा। पर बेटा, यदि हम दोनों भूखे रहेंगे तो चलेगा, पर हमारे सभी मरीज़ भूखे नहीं रह सकेंगे। बेचारी गिलहरी को पानी पीना होगा, उस तोते की मुड़ी हुई गर्दन पर मालिश करनी पड़ेगी। और छोटे से खरगोश को तो कुत्ते ने मुँह में पकड़ लिया था, वह बेचारा अभी भी डर रहा है, उसे घास डालनी पड़ेगी। उसमें तुम मेरी मदद करोगे?"

"हें! भाईसाहब आपके पास गिलहरी, तोता और खरगोश जैसे प्राणी है। ईशान को बहुत आश्चर्य हुआ।"

भाईसाहब ने उसे अलग-अलग प्राणियों की बात कहते-कहते प्रेम से श्रीखंड खिला दिया। दोपहर को भाईसाहब ईशान को बगीचे में ले गए और संस्था के बच्चों के साथ पहचान करवाई।

"अरे शुभ, आशिष, हितार्थ, विरेन, सुरु - सभी यहाँ आओ। देखो, आज अपने परिवार में एक बहादुर सदस्य शामिल हुआ है, ईशान।"

सभी की पहचान करवाने के बाद भाईसाहब ने ईशान को बगीचे के वृक्ष और पौधों की पहचान कराई, "ईशान, यह है हितार्थ का अनार का पेड़। कैसे लाल चटक फूलों से सुशोभित है। और यह देखो विरेन का चीकू का पेड़, छोटा है पर कैसा बढ़ रहा है। और यह है शुभ की मालती। अब हम इस मालती का मंडप बाँधनेवाले हैं, हैं न शुभ?"

"अच्छा बच्चों, अब तुम सभी एक दूसरे के साथ बातचीत करो। हम सब शाम को ड्रोइंग क्लास में मिलेंगे" ऐसा कहकर भाईसाहब कमरे में आराम करने के लिए चले गए।

शुभ ने ईशान को अपने साथ बिठाया और कहा, "ईशान, आज तुम्हारा पहला दिन है इसलिए तुम्हें सब नया-नया और अलग-अलग लगेगा। मुझे भी ऐसा ही लगा था। पर मुझे भरोसा है कि तुम्हें भी हम सब की तरह कुछ ही दिनों में यह संस्था तुम्हारे परिवार की तरह लगेगी।"

विरेन शुभ की बात से सहमत हुआ। उसने ईशान से पूछा, "ईशान, तुम्हें बड़े होकर क्या बनना है?"

ईशान ने कोई जवाब नहीं दिया, इसलिए विरेन बोला, "क्या तुम्हें पता है, मुझे क्या बनना है? मुझे तो भाईसाहब की तरह शिक्षक बनना है।"

सुरु बोली, "मुझे डॉक्टर बनना है। लेकिन भाईसाहब की तरह प्रेमस्वरूप बनूँगी।"

यह सुनकर ईशान को मन में लगा कि सभी भाईसाहब से कितने प्रभावित हैं। और होंगे ही न। आज भाईसाहब ने प्रेम से उसका भी दिल जीत लिया था। और यही तो भाईसाहब की खासियत थी। किसी भी बच्चे की गलती निकाले बिना वह प्रेम से उस बालक को सुधारने का प्रयत्न करते और उस प्रेम का अद्‌भुत असर बच्चों पर था, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण ईशान ने ड्रोइंग क्लास में देखा।

ड्रोइंग क्लास में सभी बच्चे वॉटर कलर से कैन्वास पर पेन्टिंग कर रहे थे। आशिष अपनी सुंदर पेन्टिंग को फाइनल टच दे रहा था, तभी अचानक विरेन के धक्के से आशिष के कैन्वास पर लाल रंग गिर गया।

विरेन को एकदम झटका लगा। उसकी आँखों में से टपटप आँसू गिरने लगे।

"आई एम सो सॉरी आशिष। मुझसे यह क्या हो गया?" अत्यंत खेद के साथ विरेन बोला।

आशिष ने जल्दी से सारा रंग पोंछ लिया और विरेन का हाथ पकड़कर कहा, "अरे, इसमें इतना दुःखी क्यों होता है? एक ही पेन्टिंग तो बिगड़ी है। अपनी दूसरी सभी पेन्टिंग्स तो सलामत है न? तुम बिल्कुल भी दुःखी मत हो। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारी पेन्टिंग में मदद करता हूँ।"

यह देखकर ईशान को बहुत आश्चर्य हुआ,

"मैं आशिष की जगह होता तो मैंने विरेन को एक थप्पड मार दिया होता और आशिष ने तो विरेन पर बिल्कुल भी गुस्सा नहीं किया। आशिष के मन में मेरा-तुम्हारा कुछ है ही नहीं। आपस में सभी को अंदर ही अंदर कितना प्रेम है।"

और उस प्रेम का असर ईशान पर भी होने लगा। थोड़े ही समय में ईशान में जबरदस्त परिवर्तन आ गया। पढ़ाई में उसका उत्साह और रुचि बढ़ने लगी। बस इतना ही नहीं, वह संस्था के दूसरे विद्यार्थियों के साथ मिलकर संस्था की कई प्रवृत्तियों में भाग लेने लगा।

वेकेशन में जब ईशान घर गया तब मम्मी डैडी को भी उसमें आए हुए परिवर्तन को देखकर बहुत आनंद हुआ। और उन्हें इस "नए" ईशान को देखकर आश्चर्य भी बहुत हुआ। वेकेशन के बाद, जब डैडी ईशान को संस्था में छोड़ने गए तब वह भाईसाहब से भी मिलें।

हाथ जोड़कर डैडी बोले, "भाईसाहब, आपका जितना आभार मानूँ उतना कम है।" आश्चर्य के साथ भाईसाहब ने पूछा, "क्या हुआ?"

डैडी ने कहा, "पिछ्ले दो साल से ईशान बहुत ही शरारती हो गया था। घर में हर समय ऊधम, उत्पात, मारपीट और तोड़फोड़ करता था और उसकी स्कूल से भी ऐसी ही शिकायतें आती थी। हम तो उसकी शरारतों से परेशान हो गए थे। इसीलिए जब आपकी संस्था का नाम सुना तब उसे यहाँ दाखिल कर दिया। पर आपने तो कमाल कर दिया। इस वेकेशन में ईशान का एक नया ही रूप देखा। वह सबके साथ विनम्रता से रहा। मम्मी को काम में मदद करता था और वेकेशन में समय बिगाड़ने की जगह अलग अलग प्रवृत्तियाँ और वाचन करता। ऐसा अद्भुत कारनामा आपने कैसे किया? ईशान को आपने कैसे वश किया?"

यह सुनकर भाईसाहब के चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट आई। आँखों पर से चश्मा निकालकर टेबल पर रखा और फिर कहा, "साहब, बहुत समय पहले का एक प्रसंग है। मेरे दिल में अभी भी वह प्रसंग एकदम ताजा है। उस वक्त मेरी उम्र करीब बारह वर्ष की होगी। उस दिन हमारे घर में त्यौहारों जैसी खुशी थी। मेरी बड़ी बहन ने उसकी बहुत सारी सहेलियों को घर पर बुलाया था। इसका कारण यह था कि उस दिन हमारे घर पहली बार टी.वी. आनेवाला था। पैसों की इतनी सुविधा न

होने के बावजूद भी मेरी बड़ी बहन और माता-पिता ने मेरी खुशी के लिए टी.वी. खरीदने का निर्णय किया था। टी.वी. आया और उसे एक टेबल पर रखा गया। सभी लोग बहुत उत्साह में थे।"

माँ ने पिताजी से टी.वी. चालू करने के लिए कहा। पिता जी को नहीं आएगा, ऐसा सोचकर थोड़ी सी भी धीरज रखे बिना मैं टी.वी. के पास दौड़ा। और मेरा धक्का टी.वी. को लगने पर टी.वी. का काँच टूट गया और मेरे दिल को धक्का लगा।

"यह क्या किया तुमने बेवकूफ!" बड़ी बहन ज़ोर से चिल्लाई, "कुछ पता भी है तुम्हें?"

बड़ी बहन को चुप कराते हुए माँ बोली, "बेटा, क्या तुम्हें ऐसे शब्द बोलने चाहिए? मुझे तो ऐसा लगता था कि तुम अपने भाई से प्रेम करती हो।"

"पर माँ कोई ऐसी गलती करे उससे प्रेम कर सकते हैं? इसने तो हम सबके उत्साह पर पानी फेर दिया।" बहन ने चिढ़कर जवाब दिया।

"कोई गलती करे और यदि प्रेम कम हो जाए तो उसे प्रेम कहते ही नहीं। गलती तो सभी से होती है। नहीं होती? अभी क्या भाई को उसकी गलती पर पछतावा नहीं हो रहा होगा? क्या उसे टी.वी. टूटने का दुःख नहीं हो रहा होगा?" ऐसे समय पर उसका दिल और अधिक दुःखाने के बजाय उससे प्रेम से पूछा होता कि "भाई तुम्हें चोट तो नहीं लगी न? तो उसे कितना अच्छा लगता।"

और फिर चश्मा लगाते हुए भाईसाहब बोले, "और माँ के उन प्रेम भरे शब्दों ने मुझे जीत लिया। यदि उस समय माँ ने मुझे डाँटा होता तो शायद मैं भी सामने कुछ बोल देता। मेरा पछतावा भी चला जाता। लेकिन माँ ने मुझे प्रेम से जीत लिया। माँ की वह बात मेरे छोटे से हृदय में छप गई। और आज मैं भी माँ की तरह अपने विद्यार्थियों की गलतियों को देखने के बजाय उन्हें प्रेम से जीतता हूँ और ऐसी भावना रखता हूँ कि मेरे विद्यार्थी भी एक दूसरे के साथ प्रेम से रहें और प्रेम का ही हथियार इस्तेमाल करके जगत् को जीत लें।"

भाईसाहब की बात ईशान के पापा को छू गई। गद्गद् होकर वह बोले, "सच में, अनोखा है आपका तरीका। मुझे विश्वास है कि ईशान आपके मार्गदर्शन में रहने से ज़रूर खिल उठेगा । अब वह मेरा नहीं लेकिन असल में आपका बेटा है। आपके तरीके से उसे प्रशिक्षित करना। मैं निश्चिंत होकर वापस जा रहा हूँ।" ऐसा कहकर ईशान के डैडी ने भाईसाहब से हाथ मिलाया और घर जाने के लिए रवाना हुए।

जहाँ प्रेम वहाँ भेद नहीं

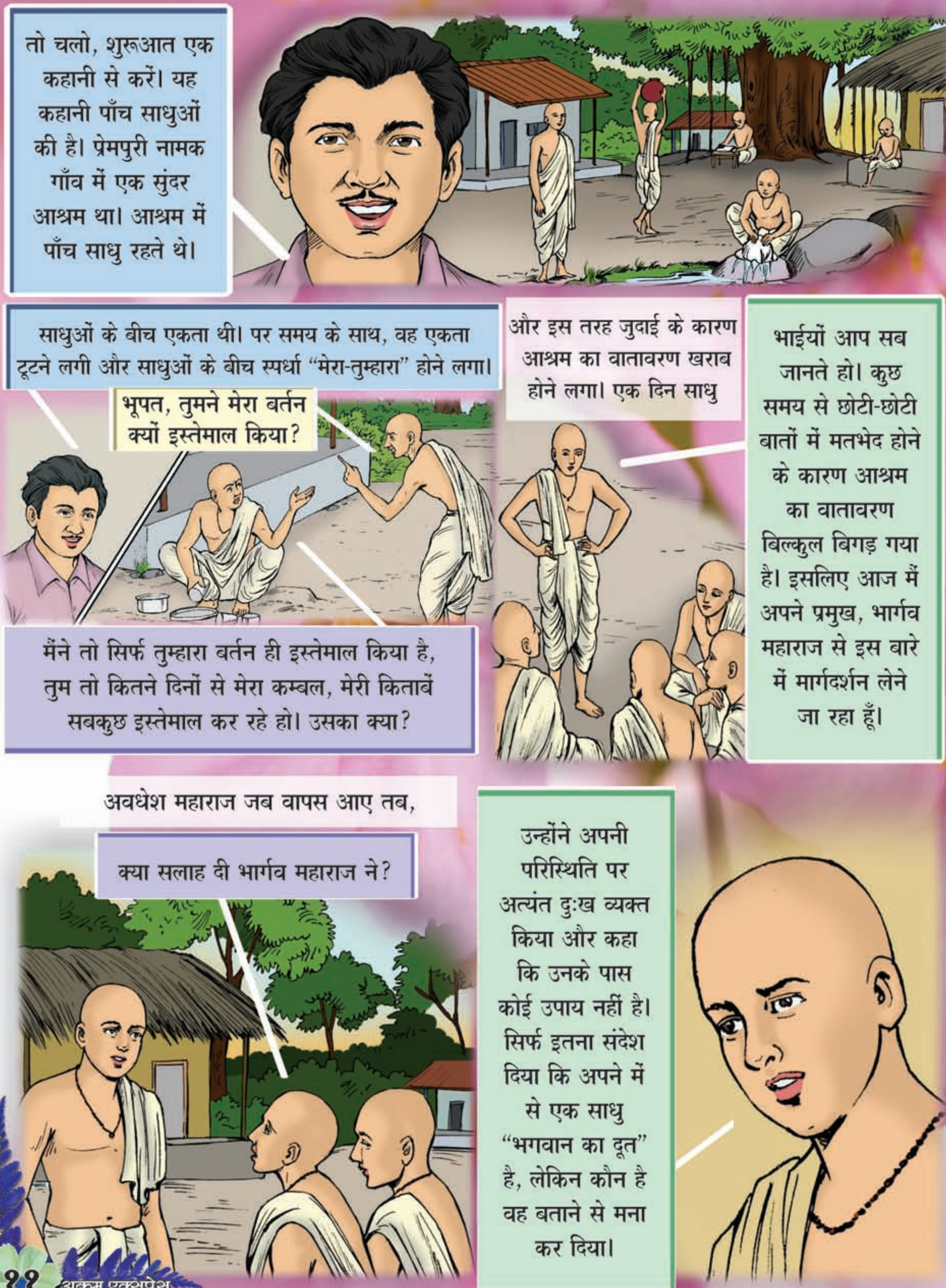

तो चलो, शुरूआत एक कहानी से करें। यह कहानी पाँच साधुओं की है। प्रेमपुरी नामक गाँव में एक सुंदर आश्रम था। आश्रम में पाँच साधु रहते थे।
साधुओं के बीच एकता थी। पर समय के साथ, वह एकता टूटने लगी और साधुओं के बीच स्पर्धा "मेरा-तुम्हारा" होने लगा।
भूपत, तुमने मेरा बर्तन क्यों इस्तेमाल किया?
मैंने तो सिर्फ तुम्हारा बर्तन ही इस्तेमाल किया है, तुम तो कितने दिनों से मेरा कम्बल, मेरी किताबें सबकुछ इस्तेमाल कर रहे हो। उसका क्या?
और इस तरह जुदाई के कारण आश्रम का वातावरण खराब होने लगा। एक दिन साधु
भाईयों आप सब जानते हो। कुछ समय से छोटी-छोटी बातों में मतभेद होने के कारण आश्रम का वातावरण बिल्कुल बिगड़ गया है। इसलिए आज मैं अपने प्रमुख, भार्गव महाराज से इस बारे में मार्गदर्शन लेने जा रहा हूँ।
अवधेश महाराज जब वापस आए तब,
क्या सलाह दी भार्गव महाराज ने?
उन्होंने अपनी परिस्थिति पर अत्यंत दुःख व्यक्त किया और कहा कि उनके पास कोई उपाय नहीं है। सिर्फ इतना संदेश दिया कि अपने में से एक साधु "भगवान का दूत" है, लेकिन कौन है वह बताने से मना कर दिया।

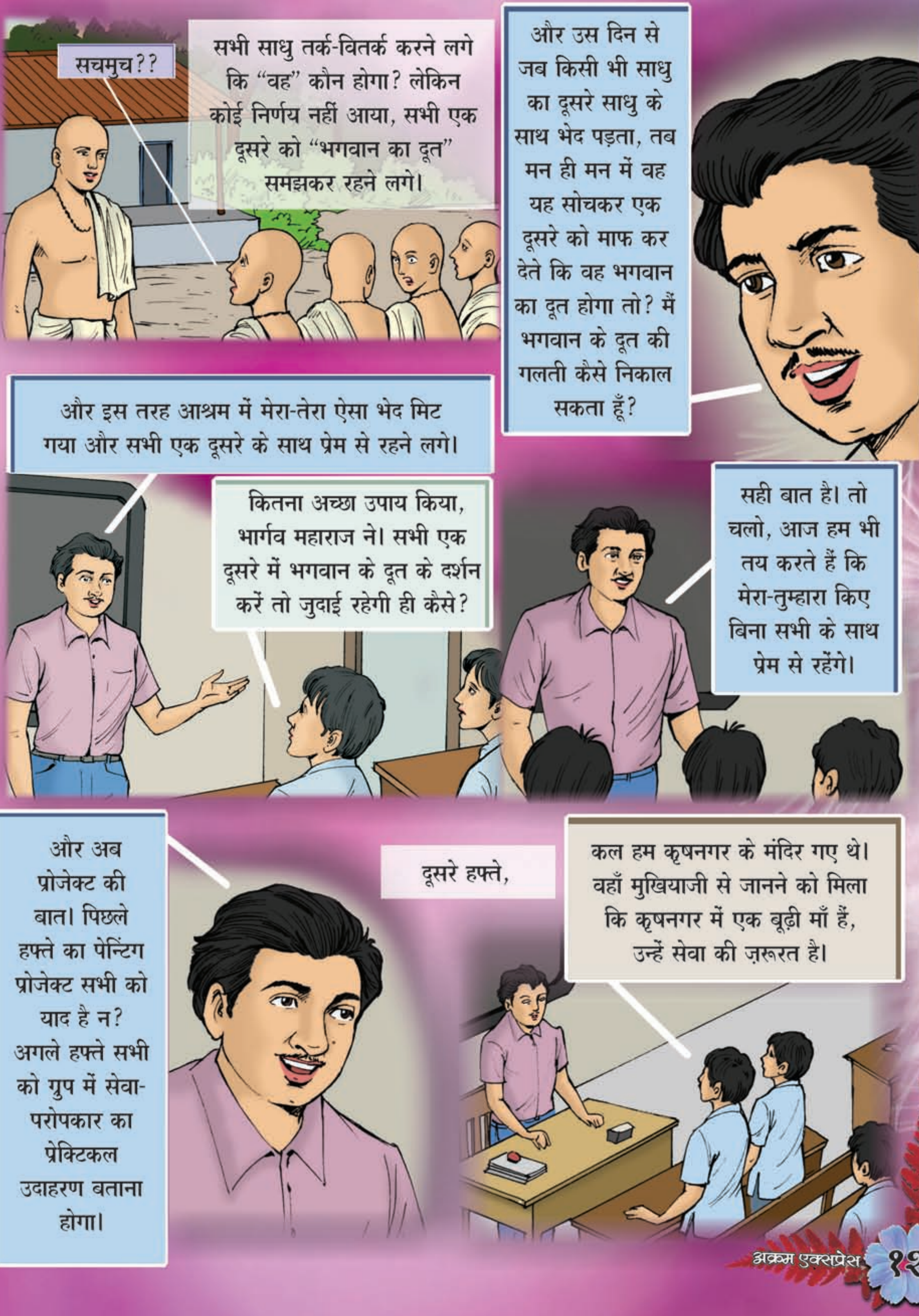

सचमुच??
सभी साधु तर्क-वितर्क करने लगे कि "वह" कौन होगा? लेकिन कोई निर्णय नहीं आया, सभी एक दूसरे को "भगवान का दूत" समझकर रहने लगे।
और उस दिन से जब किसी भी साधु का दूसरे साधु के साथ भेद पड़ता, तब मन ही मन में वह यह सोचकर एक दूसरे को माफ कर देते कि वह भगवान का दूत होगा तो? मैं भगवान के दूत की गलती कैसे निकाल सकता हूँ?
और इस तरह आश्रम में मेरा-तेरा ऐसा भेद मिट गया और सभी एक दूसरे के साथ प्रेम से रहने लगे।
कितना अच्छा उपाय किया, भार्गव महाराज ने। सभी एक दूसरे में भगवान के दूत के दर्शन करें तो जुदाई रहेगी ही कैसे?
सही बात है। तो चलो, आज हम भी तय करते हैं कि मेरा-तुम्हारा किए बिना सभी के साथ प्रेम से रहेंगे।
और अब प्रोजेक्ट की बात। पिछले हफ्ते का पेन्टिंग प्रोजेक्ट सभी को याद है न? अगले हफ्ते सभी को ग्रुप में सेवा-परोपकार का प्रेक्टिकल उदाहरण बताना होगा।
दूसरे हफ्ते,
कल हम कृषनगर के मंदिर गए थे। वहाँ मुखियाजी से जानने को मिला कि कृषनगर में एक बूढ़ी माँ हैं, उन्हें सेवा की ज़रूरत है।

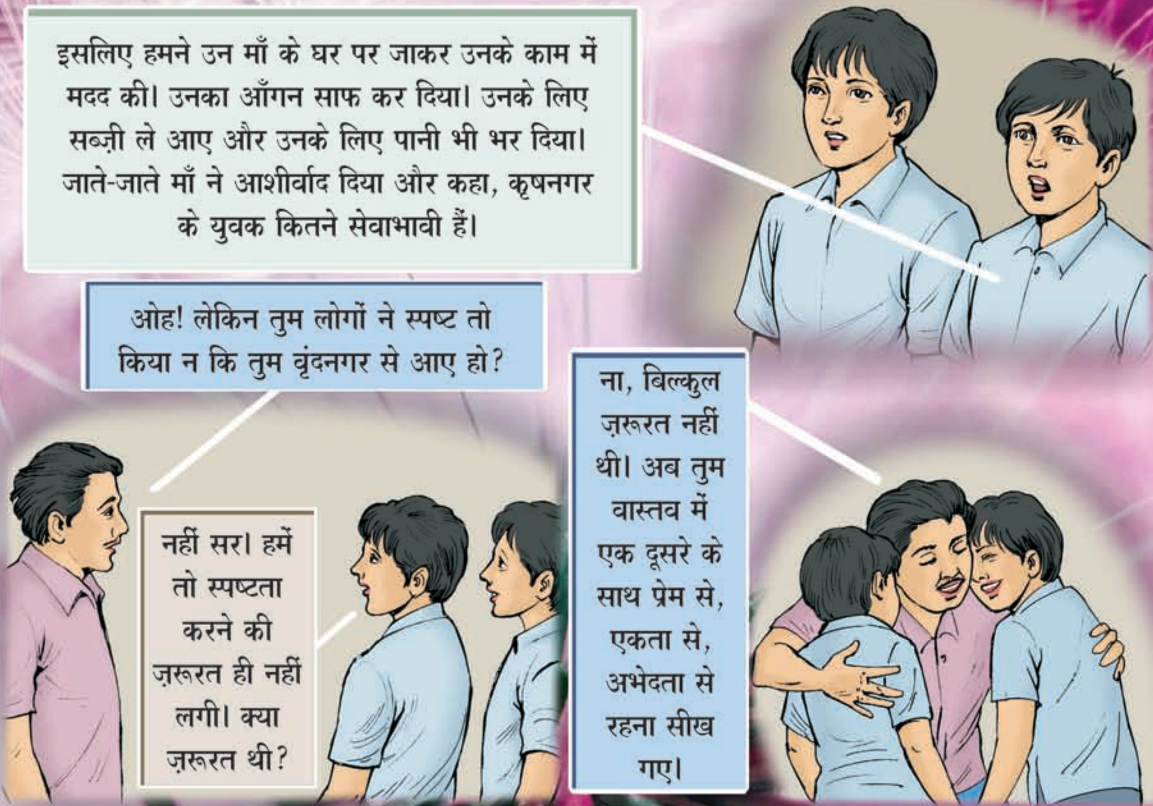

"प्रेम यानी क्या?"

५ साल का भाई उसकी ७ साल की बहन से पूछता है, "प्रेम यानी क्या?" बहन - "तुम रोज़ मेरे बेग में से चोकलेट लेकर खा जाते हो... मुझे पता है फिर भी में रोज़ वहीं चोकलेट रखती हूँ... वह प्रेम है।"

मीठी यादें

१९८७ में दादाश्री ने नीरू माँ से कहा, "नीरूबेन, आपको पूरे जगत् के मदर बनना है।" नीरू माँ ने दादा की इस बात को सिद्ध करके दिखाया। वह वास्तव में एक बेजोड़ वात्सल्यमूर्ति ही थीं।

सीमंधर सिटी की बात है। एक बार एक ब्रह्मचारी भाई को दांत दुःख रहा था। रूट कैनाल करवाना पड़ा था। वह करते-करते मसूडे में दांत का बारीक कण रह गया, निकल ही नहीं रहा था। डॉक्टर खुरचकर निकाल रहे थे। लोकल ऐनिस्थीज़िया दिया था लेकिन अगर नस को छूता तो उस भाई के पूरे शरीर में झटका लगता था। असह्य वेदना हो रही थी। वह कण इस तरह फँस गया था कि निकल ही नहीं रहा था। रात के बारह बज गए। शाम के सात बजह से शुरू किया था, पाँच घंटे से डॉक्टर मेहनत कर रहे थे।

वह भाई वापस नहीं लौटे इसलिए नीरू माँ ने फोन किया। अब तक वह भाई दुःख रहा था फिर भी ज्ञान सेट करने की ट्राय कर रहे थे और चुपचाप बैठे थे। लेकिन जैसा नीरू माँ का फोन आया और फोन पर उनकी आवाज़ सुनते ही तुरंत वे रोने लगें। वे अलग रखने का ट्राय कर रहे थे, वह बंद हो गया और बहुत ज़ोर से रो पड़े। फोन डॉक्टर को वापस देते हुए कहा, मैं नीरू माँ से बात नहीं कर पाऊँगा।

पूछताछ करने पर डॉक्टर ने नीरू माँ से कहा कि, "मसूडे में कण घुस गया है, वह निकल ही नहीं रहा है। इसलिए देर हो गई।"

नीरू माँ ने पूछा, "क्या मैं आऊँ?"

भाई ने मना कर दिया क्योंकि उनका आवाज़ सुनने पर मेरी यह हालत है तो वे आएँगे तो मेरी क्या हालत होगी?

नीरू माँ ने डॉक्टर से कहा, "हर्ज नहीं, आप करो, मैं विधि करती हूँ।"

आखिर में रात को एक बजे कण निकला और फिर टांके लिए, इस तरह देढ़, पोने दो बज गए थे। वह भाई को ऐसा हुआ कि बस, अब मुझे नीरू माँ के पास जाकर, गोद में सिर रखकर रोना है। तो मेरा सारा पेन खत्म हो जाएगा।

वे सीधे नीरू माँ के पास गए। दीपकभाई ने दरवाज़ा खोला।

"नीरू माँ कहाँ है?" सीधे ही उन्होंने पूछा।

"ऊपर, उनके बेडरूम में।" दीपकभाई ने कहा।

वे भाई सीधे दौड़कर ऊपर गए। नीरू माँ पलंग पर बैठे थे। उनकी गोद में सिर रखकर दस-पंद्रह मिनिट तक वे खूब रोए। घंटों से रोककर रखा हुआ एक साथ निकाल दिया, वे बहुत रोए। नीरू माँ उन्हें थपथपाते रहे। जैसे ही उन्होंने सिर ऊपर किया तो नीरू माँ के कपड़े पूरे खून से भर गए थे।

"नीरू माँ, खून!" उस भाई को बहुत क्षोभ हुआ।

"कोई बात नहीं, तुम्हें अभी भी दुःख रहा है?"

"हाँ, बहुत ही दुःख रहा है।"

रात के दो बजे थे। नीरू माँ ने तुरंत ही दीपकभाई से कहा, "अमरीका फोन कर। वहाँ पर अभी सुबह होगी। वहाँ के अपने डॉक्टर महात्मा को फोन करके उनसे पेन्किलर दवाई का नाम ले लो। वे लोग पेनलेस सर्जरी करते हैं उन्हें इसका पता होगा।"

दीपकभाई ने तुरंत फोन करके दवाई का नाम लिया और घर में से उस दवाई को ढूंढकर भाई को दी।

नीरू माँ ने उनका पलंग अपने रूम में सिफ्ट किया। खून और सब साफ करके, उन्हें वहाँ पर ही सुला दिया, "तुम आज यहाँ पर सो जाओ। कहीं नहीं जाना है।"

फिर बाद में नीरू माँ सिर पर हाथ फेर रहे थे और दीपकभाई पैर को सहला रहे थे, तलवें पर हाथ फेर रहे थे। उन्हें तुरंत नींद आ गई। पाँच घंटों के बाद सुबह शायद आठ बजे, जब वे उठे तब देखा तो नीरू माँ और दीपकभाई वहीं, उसी पोज़िशन में बैठे थे। नीरू माँ सिर पर हाथ फेर रहे थे और दीपकभाई पैर पर हाथ फेर रहे थे। भाई सोचते ही रह गए कि ये लोग सोए ही नहीं!

उसके बाद के पाँच दिन नीरू माँ खुद, उनके लिए घी डालकर खिचड़ी बनाते और उसमें हैन्ड मिक्सर घुमाकर उसका लिक्विड फॉर्म बनाकर देते थे और फिर खिलाते थे। इस तरह पाँच दिन सुबह, दोपहर और शाम तीनों समय वही खाना खाया। इस तरह घाव भर गया और सब ठीक हो गया। तब तक नीरू माँ उनकी पूरी टेक केर करते रहें।

प्रेम स्वरूप ज्ञानी...

किस शब्द में उनका वर्णन करें...

धन्य है सभी महात्माओं को, जिन्हें ज्ञानी के प्रेम का अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ!

ऐतिहासिक गौरवगाथा

संत एकनाथ का जन्म संवत १५९० में, महाराष्ट्र में पैठण के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। एकनाथ ने बहुत सालों तक अपने गुरु की सेवा की थी और गुरु कृपा के पात्र बने। अपनी गुरुभक्ति का वर्णन करते हुए, वे कहते, "मैं गुरु सेवा में ऐसा तल्लीन हो जाता था कि भूख-प्यास को भी भूल जाता।" गुरु भक्ति ऐसी हो तो फिर ज्ञान कैसे नहीं आएगा?

एकनाथ के घर रोज़ कथा-कीर्तन चलता। वे कहते, "कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। सभी परमात्मा स्वरूप हैं।" राणा हरिजन रोज़ उनकी कथा सुनते। राणा की एकनाथ के प्रति परम भक्ति थी। एक दिन अपनी भक्ति व्यक्त करने के लिए उन्होंने एकनाथ महाराज से कहा, "घर पर भोजन के लिए पधारिए और हमारा गरीब निवास पावन करिए।"

एकनाथ ने तुरंत ही राणा हरिजन का निमंत्रण स्वीकारते हुए कहा, "कल ही आऊँगा!"

दूसरे दिन एकनाथ, राणा हरिजन के घर गए। हरिजन ने आँगन लीपकर तैयार किया था। उसमें रंगोली बनाकर पट्टा बिछाया था। तुलसी के गमले में दीपक जलाया हुआ था और धूप से वातावरण सुगंधित था। हरिजन दम्पति ने एकनाथ की पूजा की और आनंद से उन्हें भोजन करवाया।

पूरे गाँव में यह बात फैल गई। ब्राह्मण एकनाथ को "भ्रष्ट चांडाल" कहने लगे। लेकिन एकनाथ को अपने निंदकों के प्रति बिल्कुल द्वेष नहीं हुआ। अपनी निंदा सुनकर उन्होंने कहा, मेरी निंदा करनेवाले मेरे पाप धो रहे हैं। वे मेरे गुरु हैं और मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ। निंदा से डरकर उन्होंने अपने सिद्धांत को कभी भी नहीं छोड़ा और अपनी मान्यता पर अडिग रहे।

गर्मियों के दिन थे। एकनाथ कुछ संतों के साथ काशी से गंगाजल लेकर रामेश्वर जा रहे थे। गंगाजल भगवान रामेश्वर को चढ़ाना था। रास्ते में जाते हुए, एकनाथ ने एक गधे को पानी के बिना जमीन पर तड़पते हुए देखा। एकनाथ को दया आ गई। उन्होंने कंधे पर से गंगाजल भरा पात्र उतारकर मरते हुए गधे को पिला दिया। गधा बच गया।

एकनाथ के साथियों ने कहा, "यह क्या किया? भगवान का गंगाजल गधे को पिला दिया? अब रामेश्वर में क्या चढ़ाओगे?"

एकनाथ ने कहा, "मैंने गंगाजल रामेश्वर को

ही चढ़ाया है। गधे में भी वही रामेश्वर है।"

ऐसा काम करने पर फिर से उनकी निंदा हुई। लेकिन उन्होंने कभी अपने निंदक का दोष नहीं देखा।

एकनाथ बहुत ही शांत स्वभाव के थे। वे कभी भी किसी पर गुस्सा नहीं होते थे। एकनाथ के निंदकों ने एक गरीब ब्राह्मण को उकसाया, "यदि तुम एकनाथ को गुस्सा दिलवा दोगे तो हम तुम्हें दो सौ रुपये इनाम में देंगे।"

ब्राह्मण एकनाथ के घर गए। उस समय एकनाथ पूजा करने बैठे थे। जूते उतारे बिना ब्राह्मण पूजाघर में घुस गए और धम्म से एकनाथ की गोद में बैठ गए। बिल्कुल भी गुस्सा हुए बिना एकनाथ ने कहा, "आपका यह स्नेहभाव देखकर मुझे बहुत आनंद हुआ।" ब्राह्मण झेंप गए। लेकिन उन्हें दो सौ रुपयों का लोभ था। इसलिए उन्होंने कहा, "मुझे भूख लगी है।"

एकनाथ ब्राह्मण के साथ भोजन के लिए बैठे। एकनाथ की पत्नी गिरिजाबाई परोसने के लिए झुकीं तभी ब्राह्मण कूदकर उनकी पीठ पर सवार हो गए। तब भी एकनाथ गुस्सा नहीं हुए। उन्होंने गिरिजबाई से कहा, "संभालना ब्राह्मण गिर न जाएँ।"

गिरिजाबाई ने कहा, "पुत्र को इस तरह पीठ पर चढ़ाकर घूमने की मुझे आदत है, आप चिंता न करें।" ब्राह्मण की ऐसी दशा हो गई कि काटो तो खून न निकले।

एकनाथ और गिरिजाबाई के पैर में गिरकर उन्होंने उनसे माफी माँगी। आँखों में आँसू के साथ वह बोले, "दो सौ रुपये के लोभ के कारण तुम्हें गुस्सा दिलवाने के लिए मैंने यह पाप किया है।"

यह सुनकर एकनाथ हँसते-हँसते बोले, "तो पहले से ही ऐसा बता देना था न, मैं गुस्सा हो जाता।"

इसी तरह एकनाथ को क्रोधित करने के लिए एक मुसलमान भाई ने भी निष्फल प्रयास किया था। एकनाथ रोज़ नदी में नहाने जाते। रास्ते में उसका घर था। एकनाथ नहाकर घर लौटते, तब कई बार वह उन पर थूक देता। ऐसा होता तब एकनाथ फिर से नहाने जाते। नहाकर बाहर आते कि फिर वह उन पर थूक देता। कई बार तो एकनाथ को चार-पाँच बार नहाना पड़ता लेकिन वे कभी गुस्सा नहीं होते थे।

एक दिन वह भाई जिद पर आ गए। दो-पाँच बार नहीं लेकिन एक सौ आठ बार उसने एकनाथ पर थूका। फिर भी एकनाथ के मन की शांति नहीं टूटी। उस भाई के प्रति उन्होंने काया से या वाणी से किसी भी तरह का प्रतिकार नहीं किया। अंत में वह शर्माया। उसने एकनाथ के पैर में गिरकर उनसे माफी माँगी।

अपने जीवन में हुई ऐसी कई घटनाओं द्वारा एकनाथ ने जीवमात्र के प्रति समता और दयाभाव दिखाया। दुनिया के सामने एकनाथ का जीवन ही एक उदाहरण के समान बन गया। संवत १६५६ चैत्र सुदी छट के दिन उन्होंने लोगों को अंतिम संदेश में कहा, "अब मैं जा रहा हूँ। भागवत धर्म का पालन करना, मिलजुलकर रहना और मनुष्य जन्म सार्थक करना।" और फिर देह त्याग किया।

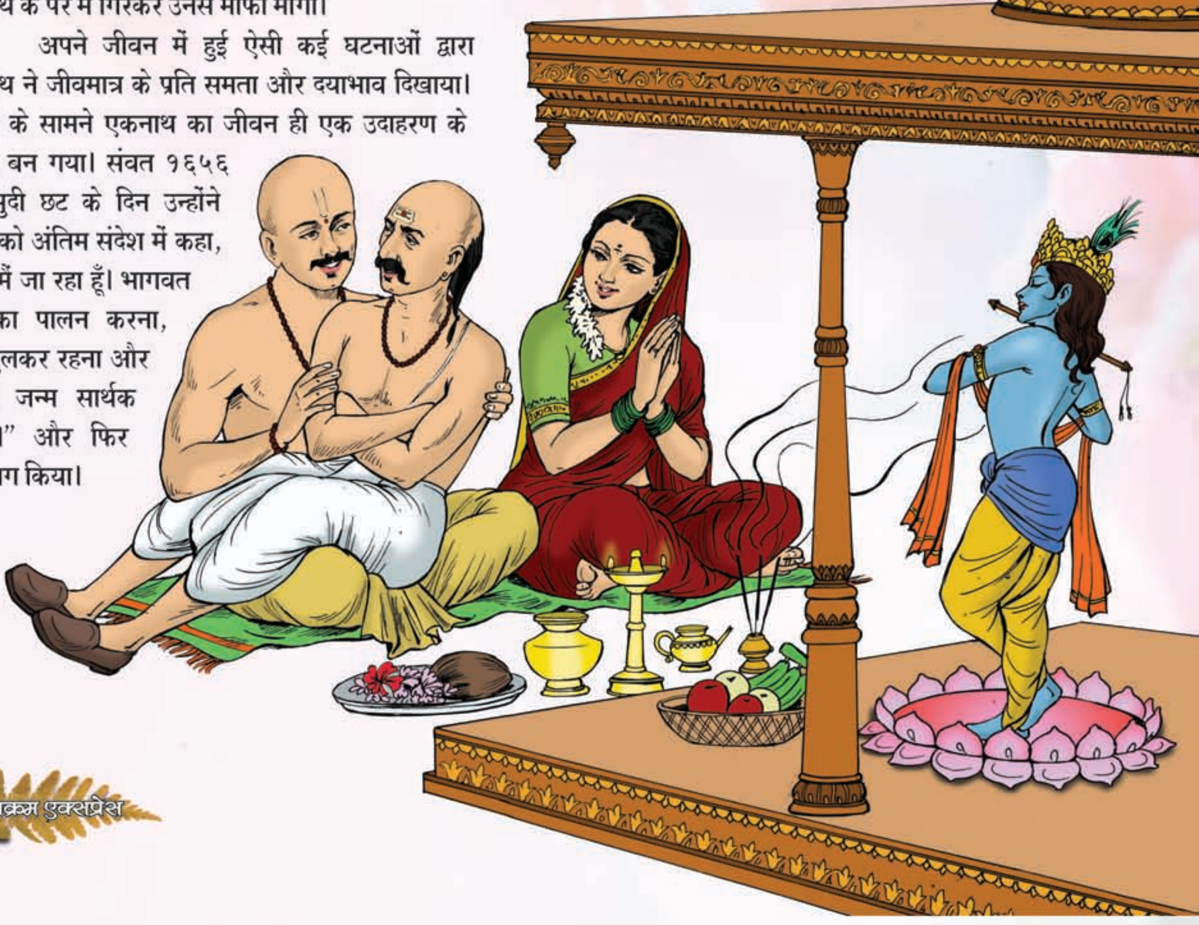

अपने आप को परखकर देखो !

अधूरी कहानी पूरी करो।

जन्माष्टमी का उत्सव था। टोपू को इस बार मटकी फोड़ने का मौका मिला। वैसे तो, ऊपर तक चढ़ना खतरे का काम था। लेकिन टोपू बेचारा क्या करे? उसे पैसे चाहिए थे। घर की स्थिति बहुत ही सामान्य होने के कारण, उसे मम्मी को मदद करने का मन हुआ और उसने यह मौका झपट लिया। वह ऊपर चढ़ा और मटकी फोड़ दी। धड़ धड़ धड़ मटकी नीचे गिरी। फिर टोपू पैसे लेने गया। गाँव वालों ने टोपू को दूसरे बच्चों से कम पैसे दिए इसलिए टोपू का दिमाग गरम हो गया। वह ज़ोर ज़ोर से सबके साथ झगड़ा करने लगा और विरोध करने लगा। यह सुनकर उसकी मम्मी वहाँ दौड़कर आई और उसे घर पर ले गई।

"मम्मी, वे लोग कैसे हैं। मेरी कमाई के पैसे ले लिए और मुझे नहीं दिए, दूसरे को दिए और मैं गरीब हूँ इसलिए मुझे नहीं दिए। कैसा भेद रखते हैं। एक दिन मैं उनके मुँह पर पैसे मारूँगा। आप मुझे घर क्यों खींच लाई?" एक-एक के जबड़े तोड़ देने वाला था। यह भी कोई न्याय है?

मम्मी ने प्रेम से टोपू के सिर पर हाथ फिराया और कहा, "टोपू, क्या जबड़े तोड़ देने से तुम्हें पैसे मिल जाते, बेटा?"

इस एक सवाल से ही टोपू की आँखें खुल गई। थोड़ा सोचकर उसने कहा, "पैसे तो नहीं मिलते पर मम्मी दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं है, ऐसे लोगों को सीधा करने का, उन से जीतने का?"

"है न बेटा? देखो ... तुम कितने गुस्से में थे? लेकिन मैंने तुम्हें नहीं डाँटा। मैंने तुम्हें बिल्कुल भी दोषित नहीं देखा, तो तुम कितनी जल्दी शांत हो गए? देखो न, मैंने प्रेम से ही जीत लिया न तुम्हें? अरे यह तो पैसे के लिए था। पर कल सुबह यदि तुम बड़े से बड़ा नुकसान कर लो तब भी मैं तुम्हें दोषित नहीं देखूँगी। गाँव के लोग तुम्हारे साथ भेद रखें यह तुम्हें अच्छा नहीं लगता न? उस भेद से तुम्हारा मन बिगड़ जाता है न? इसलिए उन्हें सिर्फ प्रेम से ही जीत सकते हो। यह बात तुम्हें अच्छी लगी?"

"हाँ, मम्मी।"

मम्मी बोली, "ऐसा? तो मुझे इतना लिखकर दो कि इस घटना में तुमने क्या-क्या गलती की और दुबारा कभी ऐसा हो तब तुम कैसे सभी को प्रेम से जीतोगे?"

बच्चों, टोपू की जगह तुम होते तो तुम क्या लिखते?

१. मेरी गलतियाँ : ____________________

____

२. सही समझ : ____________________

____

अपने आप को परखकर देखो जवाब(सजेशन) - कोई सही-गलत जवाब नहीं है, इस अंक में से मिली हुई समझ ही लिखनी है।

प्रेम स्वरूप बनने की सीढ़ियाँ :

१. मेरी गलतियाँ : क्रोध किया, उधम किया, अपशब्द बोले। गाँववालों को दोषित देखा। धमकी देकर भेद रखा, ये मेरी गलतियाँ हैं।

२. सही समझ : दूसरों को ज्यादा पैसे मिले उसमें मुझे भी खुशी है। यह गलती हुई उसके लिए गाँववालों से माफी माँग लूँगा। और अब निश्चय करता हूँ कि किसी के साथ भेद नहीं रखूँगा और किसी की भी गलती नहीं देखूँगा। इसके लिए हे प्रभु! मुझे शक्ति दीजिए, ऐसी शक्ति माँगूँगा।

समर कैम्प - बच्चों के लिए संस्कार सिंचन शिविर - वर्ष २०१४

	ग्रुप **E** - लड़कों और लड़कियों के लिए		
स्थल	८ से १० वर्ष	११ से १२ वर्ष	संपर्क नंबर
बैंग्लोर	१० से २० अप्रैल में		
सीमंधर सिटी	२०,२१ अप्रैल	२२,२३ अप्रैल	०७९-३९८३०९३९
भूज	२६,२७ अप्रैल	२८,२९ अप्रैल	९९०९५६५६७९
भावनगर	२८,२९ अप्रैल	२८,२९ अप्रैल	९५७४००८०९०
बड़ौदा	२६,२७ अप्रैल	२६,२७ अप्रैल	८९८०९९५२५५
गांधीधाम	१ मई	१ मई	९६८७७०४६६५
मोरबी	१३ मई	१३ मई	९९२५०२६८३४
राजकोट	१४,१५ मई	१६,१७ मई	८८६६८८८८३७
सूरत	१५,१६ मई	१५,१६ मई	९७२५८३२७०४
जामनगर	१९ मई	१९ मई	९८७९५५१५१८
मुंबई सेन्ट्रल	२४,२५ मई	२४,२५ मई	०९३२०२५५२६६
मुंबई वेस्टर्न	२४,२५ मई	२४,२५ मई	०८६५२८९००६६
गोधरा	७ मई	७ मई	९९२४२६४३९७
भरुच	६ मइ	६ मइ	९४२८५८६७०१

विशेष नोट -

१. समर कैम्प में हिस्सा लेने के लिए आपके नज़दीक के सेन्टर पर रजिस्ट्रेशन करवाना ज़रूरी है। रजिस्ट्रेशन चार्ज नोन रिफन्डेबल है।

२. बच्चे की उम्र और कक्षा के अनुसार ऊपर दी गई तारीख से १० दिन पहले रजिस्ट्रेशन बंद किया जाएगा, उसके बाद होनेवाले रजिस्ट्रेशन के लिए तत्काल चार्ज लिया जाएगा।

३. सीमंधर सिटी के बच्चों का रजिस्ट्रेशन - त्रिमंदिर संकुल के "स्टॉर ओफ हैपीनेस" में सुबह ९.३० से १२ और शाम को ४ से ७ के दौरान १० दिन पहले रूबरू हो सकेगा। (रजिस्ट्रेशन १० मार्च से शुरू होगा)

"अक्रम एक्सप्रेस" पत्रिका की माहिती - फॉर्म नं. ४ (रूल नं.८)

१. प्रकाशन स्थल : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१,जिला-गांधीनगर

२. प्रकाशन का समय : प्रतिमास

३. मुद्रक : अंबा ऑफसेट, राष्ट्रीयता : भारतीय,

पता - पार्श्वनाथ चेम्बर्स के बेसमेन्ट में, नई आर.बी.आई के पास, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-१४

४. प्रकाशक : महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय,

पता : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१, जिलाः गांधीनगर

५. संचालक : डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय, पताः ऊपर के अनुसार

६. मालिक का नाम : महाविदेह फाउन्डेशन, राष्ट्रीयता : भारतीय, पताः ऊपर के अनुसार

मैं डिम्पल महेता, ज़ाहिर करता हूँ कि ऊपर्युक्त माहिती मेरे जानने में और मान्यता अनुसार सही है।

दि. ८-३-२०१४, अहमदाबाद। महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

Akram Express

March 2014
Year : 1, Issue : 12
Conti. Issue No.:12

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No GUJHIN/2013/53111
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

अहमदाबाद

GNC Day

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.